कॉमरेड जी. एम. मेलेंकोव और कॉमरेड एम. ए. सुस्लोव की भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रतिनिधियों कॉमरेड राव, कॉमरेड डाँगे, कॉमरेड घोष और कॉमरेड पुन्नैया के साथ मुलाकात

21 फरवरी 1951

कॉ. मेलेंकोवः हमें बताया गया है कि आप संगठनात्मक सवालों पर हमारे साथ विचार-विमर्श करना चाहते हैं। आप लोगों को यह पता ही है कि पार्टी के कार्यक्रम से जुड़े सवालों पर कुछ ही दिनों में बातचीत होगी।

रावः जी, हम लोग संगठनात्मक सवालों पर बात करना चाहते हैं। हमारी मुख्य संठनात्मक मुश्किलें इस प्रकार हैंः हमें अपने सम्मेलन (कांग्रेस) की तारीख़ें आगे बढ़ाने के सवाल को और केन्द्रीय समिति के गठन को निश्चित तौर पर हल करना है। कॉमरेड स्टालिन ने पार्टी में अनवरत चलने वाले विचार-विमर्श को समाप्त करने की ज़रूरत की बात की है। हमें लगता है कि एक बार राजनीतिक लाइन तय हो जाने के बाद हमें पार्टी काँग्रेस का आयोजन कर लेना चाहिए। हमें पार्टी के लोगों को यह समझाना होगा कि जब इतने लंबे और अहम अर्से तक पार्टी काँग्रेस नहीं हुई तो क्या कारण है कि हम उसे और आगे बढ़ा रहे हैं। हमारी पार्टी के भीतर यह राय मौजूद है कि संगठन के तमाम हिस्सों में नीचे से लेकर उपर तक सभी का चुनाव पूरी तरह लोकतांत्रिक तरीके से होना चाहिए। अगर हम ही ख़ुद ही अपने नाम से यह कहते हैं कि पार्टी काँग्रेस को अभी न किया जाए तो शायद इसमें वज़न नहीं आएगा। लेकिन, यदि हम यह कहें कि यह अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की सलाह है कि कांग्रेस की तारीख़ें आगे बढ़ा दी जाएँ तो हम शायद पार्टी के सदस्यों को समझाने में कामयाब हो सकें। अब कुछ बातें दूसरे सवाल परः केन्द्रीय समिति के गठन के बारे में। मौजूदा केन्द्रीय समिति के सदस्यों में से 14 व्यक्ति बचे हैं (1949 में केन्द्रीय समिति में 31 सदस्य थे; मई 1950 में 9 व्यक्ति थे)। यह कोई सही प्रतिनिधित्व नहीं है क्योंकि इसमें केवल हमारी, घोष और डाँगे की विचारधारा का ही प्रतिनिधित्व होता है। इसलिए ऐसी केन्द्रीय समिति पार्टी की एकता को सुनिश्चित नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि जोशी को पार्टी में वापस लेना चाहिए। पार्टी में एकता कायम करने के लिए यह ज़रूरी है। जोशी को पार्टी की केन्द्रीय समिति में लेने का सवाल पार्टी सदस्यों की महत्त्वपूर्ण संख्या द्वारा उठाया जाएगा। जोशी के साथ हम लोगों की राय मेल नहीं खाती लेकिन मैं समझता हूँ कि उसे वापस पार्टी की केन्द्रीय समिति में लेना चाहिए। कुछ राज्यों के भीतर अलग तरह के रुझान हैं और उनका प्रतिनिधित्व केन्द्रीय समिति में नहीं हुआ है। उनका भी प्रतिनिधित्व होना चाहिए। तभी हम आगे बढ़ सकेंगे। मैं समझता हूँ कि सीपीएसयू के साथ हमारा नियमित संपर्क कायम होना चाहिए ताकि रोज़ाना के व्यावहारिक काम करते हुए जो सवाल खड़े होते हैं उन्हें हल किया जा सके। हमारे वक़्त में हमें 1933 में सीपीएसयू की

केन्द्रीय समिति की तरफ़ से सलाह दी गई थी। सन् 1947 में डाँगे और झादानोव के बीच राय-मशविरा हुआ था लेकिन उस वक़्त हमें जो सलाह दी गई थी, उस पर आधा ही अमल हो सका। हमें यह जानकर गुस्सा भी आया और अचंभा भी हुआ कि डाँगे ने हमें कभी यह नहीं बताया कि उस सलाह पर अमल क्यों नहीं किया गया। हम यह जानना चाहते हैं कि वह सलाह क्या थी, कैसे उसके साथ भितरघात हुई ताकि हम कुछ व्यक्तियों को भी ठीक से जान सकें। सन् 1947 में वर्ल्ड फ़ेडरेशन ऑफ़ ट्रेड यूनियन के सत्र से लौटते हुए चीन के कॉमरेडों में से एक की जोशी के साथ लंबी, 6—7 घंटे तक बातचीत हुई, लेकिन यह भी केन्द्रीय समिति को रिपोर्ट नहीं किया गया। हमें हाल ही में इसका पता चला।

कॉमरेड मेलेंकोवः हम आपको यह सलाह दे सकते हैं कि सिद्धांत में किसी को सांगठनिक सवालों के हल कैसे ढूँढ़ने चाहिए। आप हमें माफ़ करेंगे कि हम आपको अलग-अलग व्यावहारिक समस्याओं पर अलग-अलग ब्यौरों में कोई मशविरा नहीं दे सकेंगे। मैं आपको यह भी ध्यान दिलाना चाहूँगा कि यह कतई ज़रूरी नहीं कि आप हमारी सलाह मानें ही। आप इसे मानने से इंकार भी कर सकते हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की काँग्रेस के आयोजन की तारीख़ें आगे बढ़ाने को उचित ठहराने के लिए यदि यह तर्क दिया जाए कि यह अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की सलाह है, तो यह आपके लिए सही नहीं होगा। यह नुकसानदेह है। आपको मॉस्को का एजेंट घोषित कर दिया जाएगा और इसका भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन को खामियाजा भुगतना होगा।

हम ऐसी कोई छोटी से छोटी वजह देने से भी हमेशा बचते हैं कि उस आधार पर इस या उस पार्टी पर मॉस्को के एजेंट का ठप्पा लगाया जाए। हमारा यह मानना है कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी इस तरह की सांगठनिक मुश्किल से निपट सकती है। आपके पास अब एक पार्टी कार्यक्रम होगा। यह महत्त्वपूर्ण परिस्थिति होगी। इस मामले में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू बी) और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के जैसे आज की स्थिति में रिश्ते हैं, वह मददगार होंगे। हम मिलकर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम का दस्तावेज़ तैयार कर लेंगे। यह दस्तावेज़ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की प्रत्येक गतिविधि की बुनियाद में रहेगा। यह भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधियों में भी मददगार होगा।

कम्युनिस्ट पार्टी के सबसे विश्वसनीय और जाँचे-परखे सदस्यों को केन्द्रीय समिति में होना ही चाहिए। केन्द्रीय समिति को पार्टी में मौजूद सभी तरह की प्रवृत्तियों के प्रतिनिधित्व की खिचड़ी नहीं होना चाहिए। आपने पूछा है कि किस तरह कुछ ख़ास कॉमरेडों से निपटा जा सकता है। सबसे पहले जोशी के बारे में - एक बार आपके पास आपका पार्टी कार्यक्रम होगा, केन्द्रीय समिति सभी गतिविधियों को तय करेगी जिनसे पूरी पार्टी

नज़दीक आएगी। केन्द्रीय समिति के गठन में ऐसे जाँचे-परखे और भरोसेमंद कॉमरेडों को लेना चाहिए जिनमें पार्टी को कार्यक्रम के सुझाये रास्ते पर नेतृत्व देने की काबिलियत हो। इस नज़रिये से जोशी की जगह कहाँ होनी चाहिए, यह आप लोगों के तय करने की बात है। अगर मुझे ग़लत याद नहीं है तो इस मुद्‍दे पर पहले भी विचार-विमर्श हो चुके हैं। यह तय करना ज़रूरी है कि जोशी पार्टी की आकांक्षा और पार्टी कार्यक्रम के मुताबिक किस पैमाने तक काम करते हैं।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी और सीपीएसयू के बीच संपर्क होना ज़रूरी है, यह अब तक भी उपयोगी रहा है। इस विषय में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति जिस तरह भी, जितना भी प्रयास कर सकती हो, उसे ज़रूर करना चाहिए। हमारी ओर से हम सहयोग करेंगे। हो सकता है कि हम इसके लिए कुछ विशेषज्ञों का एक ऐसा संगठन बनायें जो रेडियो के मार्फ़त विशेष संपर्क में रहें। इस उद्‍देश्य के लिए हम कुछ मदद करने की कोशिश करेंगे।

डाँगेः सन् 1947 में हुई बातचीत में भी ऐसा ही एक प्रस्ताव आया था लेकिन उसे अमल किये बग़ैर ही छोड़ दिया गया।

घोषः मैं इस बात पर सहमत हूँ कि सांगठनिक सवालों पर जो सैद्धांतिक सलाह हमें मिली है, हम उसी के मुताबिक काम करेंगे और हमें सांगठनिक संबंधों के मामले भारत की कम्युनिस्ट पार्टी पर पूरी तरह छोड़ देने चाहिए।

मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि क्या भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के वे सदस्य जो स्थायी रूप से पूर्वी पाकिस्तान में रह रहे हैं, उन्हें केन्द्रीय समिति का सदस्य बनाना चाहिए।

कॉ. मेलेंकोवः पूर्वी पाकिस्तान के मज़दूरों और कामगारों से रिश्ता बना रहना सांगठनिक रिश्तों के नज़रिये से अच्छा है। लेकिन उन्हें केन्द्रीय समिति में लिया जाना ज़रूरी नहीं है।

डाँगेः चूँकि कॉमरेड झादानोव के साथ मेरी मुलाकात का ज़िक्र यहाँ आया है, इसलिए मैं आपको इतना ज़रूर बता देना चाहता हूँ कि मॉस्को से मेरे लौटने के बाद मैंने हमारी पार्टी के पोलिट ब्यूरो- कॉमरेड रणदिवे, जोशी और अधिकारी, के लिए उस मीटिंग की एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की थी। उसका कोई दस्तावेज़ मौजूद नहीं है तो उसकी वजह यह है कि मैं पूरी तरह षड्‍यंत्रकारी व गोपनीय परिस्थितियों में काम कर रहा था और मेरी रिपोर्ट को किसी लिखित दस्तावेज़ की तरह वितरित करना मुमकिन नहीं था क्योंकि वह ख़तरनाक हो सकता था। मैंने बातचीत में आये सारे मुद्‍दे जिनमें रेडियो संबंध कायम करने की भी बात

शामिल थी, उन तक पहुँचा दी थी। फरवरी, 1948 में पार्टी की दूसरी काँग्रेस हुई थी और अप्रैल में मुझे जेल में डाल दिया गया। उसके बाद मैं पार्टी जीवन से पूरी तरह कट गया।

कॉमरेड मेलेंकोवः पिछली मर्तबा हुए विचार-विमर्शों में हमने पार्टी में कैंडिडेट सदस्यता के प्रावधान के सवाल को भी छुआ था। इससे पार्टी की गुणवत्ता का स्तर ऊँचा उठाने में मदद मिलेगी और अनुभवी व प्रतिबद्ध लोग अंदर आएँगे। इससे पार्टी की सदस्यता को बहुत ज़्यादा बढ़ाने के बजाय ज़ोर उन लोगों की गुणवत्ता पर रहेगा जो पार्टी में दाख़िल होते हैं।

डाँगेः हाँ, हमने इस सलाह पर विचार किया था और हमें यह व्यावहारिक और मुमकिन लगता है।

पुन्नैयाः एक बार हमारा कार्यक्रम छप गया तो यह साफ़ हो जाएगा कि हमने कई मुद्दों को बहुत ज़्यादा उलझा दिया था। यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि हम कई सवालों पर सही नहीं थे। मसलन् विकास के चीनी रास्ते को लेकर। पार्टी कार्यक्रम के छपने के बाद हमारे कार्यक्रम और केन्द्रीय समिति के नैतिक समर्थन में प्रेस में बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों के लेख छपने चाहिए। यह हम लोगों की एक बड़ी मदद होगी। मैंने आपसे भारत में चल रहे आपसी झगड़ों के मसले पर भी कुछ बातें ज़्यादा साफ़ करने के लिए कहा था।

कॉ. मेलेंकोवः आप अपनी पार्टी का कार्यक्रम अपनी केन्द्रीय समिति के नाम से निकालिए। उससे प्रोग्राम के आधार पर लोगों को आपस में जोड़ने में मदद होगी। इसके बाद कार्यक्रम के इर्द-गिर्द कार्यकर्ता इकट्ठे हो जाएँगे। मैं सोचता हूँ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम का प्रकाशन हमारे उनके साथ रिश्तों को भी तय करेगा। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी में केन्द्रीय समिति का बहुत मज़बूत स्थान होगा। और फिर यह भी तथ्य है कि एक बार पार्टी कार्यक्रम बाहर आ गया तो पहले जो भी मत-मतांतर रहे हों, उनकी हैसियत दोयम हो जाती है और सबसे अव्वल बात यह हो जाती है कि केन्द्रीय समिति की एकता कायम करने वाला पार्टी कार्यक्रम आ गया है। आपमें से सभी को यह पहचान हासिल होगी जिन्होंने पार्टी कार्यक्रम तैयार करने में अपना अनथक सहयोग दिया। इससे भ्रम की स्थिति समाप्त हो जाएगी और कार्यक्रम के आधार पर केन्द्रीय समिति एकताबद्ध होगी।

घोषः मैं इससे पूरी तरह सहमत हूँ। हमारा कार्यक्रम एक बार छप जाएगा तो वह अपने आप में काफ़ी पर्याप्त होगा।

कॉमरेड मेलेंकोवः क्या आप कॉमरेड्स के पास हमारे लिए और भी सवाल हैं? मैं आपको यह जानकारी देना चाहता हूँ कि अगर आप मुश्किल भौतिक समस्याओं की जड़ तक पहुँचना चाहते हैं तो आप यह विचार

करना चाहेंगे कि इस वक़्त हमारे यहाँ 'इंटरनेशनल फ़ाउंडेशन टु हेल्प द लेफ़्ट वर्कर्स ऑर्गनाइज़ेशंस' मौजूद है। हम इसकी मदद उपलब्ध करा सकते हैं।

रावः हम इस बारे में सोचकर आपको इत्तिला देंगे।

डाँगेः हमारे लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम जनता पर पड़ने वाले बुर्जुआ विचारधारा के असरों के ख़िलाफ़ लड़ाई छेड़ें। ख़ासतौर पर इतिहास और दर्शनशास्त्र के सवालों को लेकर। हमारे युवाओं को इन सवालों पर बुर्जुआ मनोविज्ञान स्वीकार्य लगता है। हमारी मदद करने के लिए एकेडमी ऑफ़ साइंसेज़ इस विशेषज्ञता के काम की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले सकती है। हमें उन किताबों के अंग्रेजी अनुवादों की ज़रूरत है जो यहाँ भारत के बारे में छपी हैं, और ख़ासतौर पर हमें मार्क्स की भारत पर लिखी 'क्रोनोलॉजिकल नोटबुक्स' चाहिए। हमारे पास भारत के इतिहास से संबंधित केवल दो ही किताबें उपलब्ध हैंः एक तो द्याकोव की किताब और दूसरी प्राचीन भारत के इतिहास पर मेरी किताब। अगर हमें भारत में होने वाले वैज्ञानिक शोध और एकेडमी ऑफ साइंसेज़ के काम में कुछ एकदूसरे से मिलते-जुलते विषय मिल सकें तो यह हमारे लिए एक बड़ी मदद होगी।

मैं अपने उस निवेदन पर वापस लौटता हूँ कि हमारी एक मीटिंग ट्रेड यूनियन के सवाल पर ऑल यूनियन सेंट्रल काउंसिल ऑफ़ ट्रेड यूनियंस के अध्यक्ष कॉमरेड कुज़्नेत्सोव के साथ रखी जाए।

कॉमरेड मेलेंकोवः कॉमरेड डाँगे के निवेदन को पूरा किया जाएगा।

(मीटिंग के नोट्स) वी. ग्रिगोरयान, 22.2.51, टाइपस्क्रिप्ट आरजीएएसपीआई फॉण्ड 558, ओपिस 11, डेलो 310, एलएल. 114–118.

रशियन स्टेट आर्काइव ऑफ सोशल एण्ड पॉलिटिकल हिस्ट्री के अधिकारियों की अनुमति से प्रकाशित

रूसी से अंग्रेज़ी में अनुवाद विजय सिंह द्वारा

अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद विनीत तिवारी द्वारा

इस अनुवाद का कॉपीराइट रिवॉल्यूशनरी डेमोक्रेसी के पास है।

Revolutionary Democracy

Vol. XIII, No. 1, April 2007